Volume 7, Issue1, (January-March, 2019) Impact Factor: 5.659
[ISSN: 2348 - 2605]

कबीर का जीवन परिचय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

* उदय अढ़ाऊ

कबीर मध्यकाल के महान संतों में से एक थे, जिन्होनें भारतीय समाज और धर्म को सर्वाधिक प्रभावित किया। मध्यकाल में कबीर के विचार आधुनिक थे, जिसने समाज और धर्म की एक नयी परिभाषा दी। कबीर के विचार सत्य और मानवता पर आधारित थे, जिसे सभी धर्मो ने आत्मसाद किया। प्रत्येक काल एंव परिस्थिति में कबीर के विचारों का कोई सानी नहीं। कबीर एक नाम न होकर, एक स्वच्छ, सत्य सार्थक, निष्पक्ष विचारधारा है जो कि बेजोड है।

कबीर का जन्म, माता पिता, विवाह, संतान, भ्रमण स्थल और पंथ निर्माण ये सभी ऐसे सवाल है जिसकी सत्यता की खोज जारी है। उस काल में इतिहास लेखन के अभाव और ऐतिहासिक प्रमाणों के कमी के कारण हम कबीर के जीवन के इन सत्य को वर्तमान समय तक पूर्ण रूप से नहीं जान पाये है, परिणाम स्वरूप जो कुछ भी थोडे बहुत प्रमाण उपलब्ध हुये है उनके आधार पर कबीर का इतिहास विद्वानों एवं कबीरपंथियों ने लिखा जिसमें भिन्नता है।

कबीर ने अपने जीवनकाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण कर लोगों में ज्ञान का प्रसार किया इसका उल्लेख ऐतिहासिक ग्रंथों में देखने मिलता है। कबीरपंथी साहित्य के अनुसार कबीर के चार शिष्यों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों में कबीर पंथ के प्रचार हेतु कबीरपंथ की शाखाओं की स्थापना की गयी। वर्तमान समय में भी ऐसे कुछ स्थल स्थित है जहां कबीर का आगमन हुआ था। इस प्रकार के सभी स्थल तथा तात्कालीन संत साहित्य जिनमें कबीर का उल्लेख है यह सभी हमें कबीर के अथाह ज्ञान एवं प्रसार क्षेत्र से अवगत कराते हैं। यह कबीर का व्यक्तित्व ही है कि सार्वभौमिक रूप से कबीर मात्र एक नाम न रहकर मौलिक, मानवतावादी, सत्य तथा निर्मल विचारधारा है जो बेजोड हैं।

1. भूमिका –

कबीर का जन्म संभवतः 15वीं शताब्दी में बनारस मे हुआ था, कबीर की माता ने उनहें बनारस के लहरतारा तालाब में एक टोकरी मे छोड दिया। (यह स्थल वर्तमान समय मे कबीर प्रागट्य स्थल लहरतारा के नाम से जाना जाता है।) जहां नीरू निमा ने कबीर को रोता हुआ पाया और अपने पुत्र की तरह कबीर का पालन पोषण करने लगे। वर्तमान समय में इस स्थल पर कबीर चौरा मुलगादी स्थल स्थित है। कबीर का ंअतिम समय मगहर में व्यतीत हुआ, जहां आज भी एक ओर हिन्दु कबीर समाधि मंदिर तथा दुसरी ओर कबीर की मजार स्थित है। यहां हिन्दु मुस्लिम एक साथ कबीर के आगे शीश झुकाते है।

2. कबीर का जीवन चरित्र :—

2.1. कबीर का समय तथा जन्मतिथि :—

कबीर के समय से तात्पर्य है, कि कबीर का जन्म किस काल में हुआ था। कबीर के समय के साक्ष्यों व प्रमाणों के अभाव के कारण विद्वानों तथा कबीरपंथ की विभिन्न शाखाओं द्वारा भिन्न—भिन्न मत प्रस्तुत किये गये। परिणामस्वरुप कबीर का जीवनकाल निर्धारित करना अत्यंत जटिल हो गया है।

कबीर के जीवनकाल के सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किये गये मत निम्नलिखित है —

(1) आइन—ए—अकबरी की रचना अबुल फजल द्वारा विक्रम संवत् 1655 (सन् 1597) में की गयी।[1] इस ग्रंथ में कबीर का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि, कबीर का सम्मान हिन्दु और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों में होता था। आइन—ए—अकबरी में बनारस के जुलाहे मुबहिद का उल्लेख (कबीर के संबंध में) है।

(2) अनंत द्वारा लिखित परिचयी साहित्य में अपना समय सन् 1588 बताया गया है।[2] इस परिचयी साहित्य में कबीर का विस्तृत वर्णन किया गया है। कबीर के व्यक्तित्व तथा विचारों का वर्णन इस परिचयी साहित्य में देखने मिलता है। ब्राम्हण समाज द्वारा कबीर के विचारों के कारण रोष, रम्भा को कबीर द्वारा मां सम्बोधित करना तथा हिन्दु और मुस्लिम भद्रजनों द्वारा कबीर के विरूद्ध सिकन्दर लोदी के पास जाना, इन सभी घटनाओं का उल्लेख है।[3] अनंतदास की परिचयी में कबीर के चरित्र, विचार, जीवनकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख देखने को मिलता है।[4]

(3) सत्रहवीं सदी के मध्य में रचा गया दबिस्ताने मजाहिब नामक ग्रंथ में कबीर का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ में कबीर को एकेश्वरवादी एवं वैष्णव पंथ से जोड़ कर रामानन्द का शिष्य बताया गया है।[5]

(4) नाभादास द्वारा सन् 1585 से 1620 के मध्य भक्तमाला की रचना की गयी थी। इसमें वैष्णव पंथ के लगभग 200 भक्तों का उल्लेख किया गया है। इस भक्तमाला का साठवां छप्पय कबीर से सम्बन्धित है।[6] यह भी सत्य है कि इस भक्तमाला में कालक्रमिकता का अभाव है।

डॉ. विल्सन जैसे विद्वान इस रचनाओं को मिथकीय कथाओं का वर्णन मानते हैं।

(5) नाभादास की भक्तमाला पर सन् 1712 में चैतन्य सम्प्रदाय के संत प्रियादास ने टिका लिखा। प्रियादास ने अपनी इस टीका में कबीर को रामानन्द का शिष्य स्वीकार किया है।[7]

(6) कबीरपंथ की धर्मदासी शाखा कबीर का जन्म विक्रम संवत् 1455 ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन सोमवार को मानते हैं।[8] कुछ कबीरपंथियों द्वारा 1356 में कबीर का जन्म बताया गया है।[9]

कबीरपंथ की शाखाओं में कबीर के जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवनकाल पर अलग–अलग मत दिये गये हैं। अतः कबीर के जीवनकाल को लेकर एक मत यह भी है कि कबीर 3 जुलाई 1350 में संत नामदेव के साथ पंढरपुर गये थे[10] तथा कडुबाबा नामक कबीर के एक शिष्य ने पंढरपुर में कबीर मठ की स्थापना की थी।[11] कडुबाबा के उत्तराधिकारी आज भी कबीर कडुबाबा के गुरू शिष्य परम्परा को मानते आ रहे हैं।[12] महाराष्ट्र के इस पंढरपुर क्षेत्र में बहुत से कबीर मठों का निर्माण हुआ है, यह सभी कडुबाबा के कबीर मठ से जुडे हुए हैं।[13]

यदि इस व्रतांत को सत्य माना जाये तो विद्वानों द्वारा दिये गये समय से लगभग 100 वर्ष पूर्व कबीर का जन्म हुआ होगा और इस दशा में अनंतदास की परिचयी, प्रियादास की टीका आदि में बताये गये सिकन्दर लोदी और कबीर की भेंट को भी यदि सत्य माना जाये तो कबीर का जीवनकाल लगभग 150 से 200 वर्ष के मध्य निकलेगा। अर्थात् कबीर दीर्घायु हुए, यदि ऐसा होता तो संभव है कि किसी ग्रंथ में तो हमें कबीर के दीर्घायु होने का उल्लेख मिलता।

(7) कबीर ने बान्धवगढ़ नरेश वीरसिंह देव को विक्रम संवत् 1405–06 में अपनी शरण प्रदान की थी। इस बात का उल्लेख वीरसिंह बोध नामक ग्रंथ तथा रीवा नरेश श्री रघुराज सिंह जी विचरित ''बघेल वंश वर्णन'' में दिया गया है।[14]

डॉ रामकुमार वर्मा द्वारा कबीर पर किया गया शोध अत्यंत महत्वपूर्ण है, इन्होंने कबीर की जन्मतिथि ज्येष्ठ अमावस्या संवत् 1455 बतायी है।[15] डॉ गोविन्द त्रिगुणायन कबीर की जन्म तिथि विक्रम संवत् 1451 मानते है,[16] तथा सरनाम सिंह शर्मा भी कबीर की जन्मतिथि विक्रम संवत् 1451 मानते हैं।[17]

श्यामदास एंव आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कबीर का जन्म विक्रम संवत् 1456 को मानते है,[18] जो कि अन्य विद्वानों द्वारा बताये गये समय के आस–पास ही हैं।

कबीर से संबंधित ग्रंथ कबीर चरित्र बोध एंव कबीर कसौटी में कबीर की जन्मतिथि विक्रम संवत् 1455 ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन सोमवार उल्लेखित हैं।[19] कबीरपंथ की लगभग सभी शाखाएं इस तिथि को ही मान्यता प्रदान करती हैं।

उपरोक्त उल्लेखित सभी मत कबीर के जन्म के समय से सम्बन्धित हैं। इन सभी मतों से यह निष्कर्ष निकलता है कि कबीर का जन्म 14 शताब्दी में हुआ था। चूंकि किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ में हमें कबीर के जन्म समय के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं। इसी कारण विद्वानों तथा कबीरपंथियों द्वारा कबीर के जन्म के समय को लेकर विवाद है जो कि स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होने तक जारी रहेगा।

अनंतदास की परिचयी, प्रियादास की टीका, आइन–ए–अकबरी, दबिस्ताने मजाहिब, अनुराग सागर, कबीर मंसुर, कबीर कसौटी आदि ग्रंथों के सुक्ष्य अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि कबीर का जन्म 14 वीं शताब्दी में तथा मृत्यु 15 वीं शताब्दी में हुई थी। अनंतदास की परिचयी में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि कबीर बनारस में रहते थे तथा हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदाय कबीर का सम्मान करते थे।[20]

2.2. कबीर की माता :–

कबीर के जन्म को लेकर जो समस्या है, उसी प्रकार कबीर की माता कौन है, इस बात को लेकर भी विवाद है। साक्ष्यों के अभाव के कारण विद्वानों तथा कबीरपंथियों में अलग–अलग मत है जो कि निम्नानुसार है –

जनश्रुति के अनुसार रामानन्द स्वामी के आर्शीवाद से विधवा ब्राम्हणी के गर्भ से कबीर का जन्म हुआ था।[21] इस विधवा ब्राम्हणी द्वारा लोक लज्जा के भय से कबीर को लहरतारा तालाब के समीप फेक देने के पश्चात् नीरू–नीमा नामक दाम्पत्य को बच्चे के रोने की आवाज सुनायी दी तत्पश्चात् वे कबीर को अपने साथ ले आये और कबीर का पालन पोषण करने लगे।[22]

इस मत को यदि सत्य माना जाये तो कबीर की माता विधवा ब्राम्हणी तथा पालक नीरू–नीमा हैं। इस मत को स्वीकार करने के पीछे कोई प्रमाण या साक्ष्य नहीं है, परंतु फिर भी यह मत आम जनता के मध्य सर्वाधिक प्रचलित हैं।

कबीरपंथ की धर्मदासी शाखा का मत है कि कबीर ने लहरतारा तालाब में कमल के पुष्प पर नवजात बालक के रूप में अवतार लिया था,[23] जिसके पश्चात् इस बालक को रोता हुआ देख कर समीप से गुजर रहे नीरू–नीमा अपने साथ ले गये और इन्ही के द्वारा कबीर का पालन पोषण किया गया।[24] इस प्रकार धर्मदासी शाखा कबीर को जन्म लिया हुआ न मानकर अवतरित हुआ मानती है।[25]

जिस प्रकार हिन्दू सम्प्रदाय में युगों का विभाजन त्रेतायुग, सतयुग, द्वापरयुग, कलयुग में किया गया है, उसी प्रकार धर्मदासी शाखा इन चारों युग में कबीर को अवरतरित हुआ मानते हैं।[26]

कबीरपंथ की इलाहबाद शाखा (पारख सिद्धांत) कबीरपंथ की अन्य शाखाओं से भिन्न कबीर को किसी स्त्री कोख से जन्म लिया हुआ मानती है।[27] लेकिन यह शाखा कबीर की माता कौन है, इस प्रश्न पर मौन हैं। अन्य शाखाओं के कबीर अवतारवाद सिद्धांत को लेकर इलाहबाद शाखा का विवाद आज भी बना हुआ है।[28]

ऐतिहासिक ग्रन्थ अनंतदास की कबीर परिचयी, अबुल फजल की आईन–ए–अकबरी, प्रियादास की टीका, दबिस्ताने मजाहिब आदि ग्रंथों में से किसी में इस बात का उल्लेख देखने नहीं मिलता कि कबीर का जन्म विधवा ब्रम्हाणी के कोख से हुआ या अवतार रूप में लहरतारा तालाब में हुआ और या फिर मगहर में हुआ। इन ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन से यही अनुमान लगाया जा सकता है कि नीरू–नीमा ही कबीर के माता पिता थे।

2.3. कबीर का जन्मस्थान :–

कबीर की जन्मतिथि को लेकर जिस प्रकार समस्या है उसी प्रकार की समस्या उनके जन्म स्थान को लेकर भी है। अधिकतर कबीरपंथियों का मत है कि कबीर का जन्म लहरतारा तालाब में हुआ था।[29] कबीरपंथ की धर्मदासी शाखा कबीर को लहरतारा तालाब में अवतरित हुआ मानती है।[30] कबीरपंथ की पारख सिद्धांत इलाहबाद शाखा कबीर को लहरतारा तालाब के समीप जन्म लिया हुआ मानती है।[31]

जनश्रुति के अनुसार काशी के रामानंद स्वामी के आर्शीवाद से एक विधवा ब्रम्हाणी के गर्भ से कबीर का जन्म हुआ।[32] लोकलज्जा के भय से उस ब्रम्हाणी द्वारा नवजात बालक को लहरतारा तालाब के समीप छोड़ आयी। इस नवजात बालक पर नीरू–नीमा नामक दाम्पत्य का ध्यान गया। इन्होंने ही माता–पिता के रूप में कबीर का पालन–पोषण किया।[33]

डॉ रामकुमार वर्मा मगहर को कबीर की जन्मस्थली के रूप में स्वीकार करते हैं[34] इनके अतिरिक्त डॉ. श्यामसुन्दर काशी को कबीर की जन्मस्थली बताते हैं।[35] स्पष्ट प्रमाणों के अभाव के चलते कबीर की जन्मतिथि के सामान ही कबीर की जन्मस्थली भी विद्वानों और कबीरपंथियों के मध्य विवाद का विषय बना हुआ है।

2.4. कबीर की जाति :–

कबीर की माता कौन है, इस पर अलग–अलग मत है। इसलिये स्वाभाविक है कि कबीर की जाति को लेकर भी विद्वानों में मतभेद् होगा। यद्यपि कबीरपंथियों द्वारा कबीर की जाति के नाम पर विवाद कम ही देखने मिलता है, इसके पिछे तर्क दिया जाता है कि मानव को कबीर के द्वारा प्रदान किये गए ज्ञान, विचार, उपदेश इन सभी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।[36] इस दृष्टि से देखा जाये तो कबीरपंथियों का यह मत सत्य प्रतीत होता है।

कबीरपंथ की सभी शाखायें नीरू–नीमा को कबीर के पालक के रूप में स्वीकार करते हैं[37] और इसी आधार पर वे कबीर को जुलाहा जाति का मानते हैं।[38] कबीरग्रंथ के पदों में कबीर खुद को कभी जुलाहा जाति का कहते हैं तो कभी स्वयं को कोरी जाति का बताते हैं–

1. जाति जुलाहा मती कौ धीर, हरषि गुन श्मै कबीर।

2. तु ब्राम्हण मैं काशी का जुलाहा।

(कबीरग्रंथ पद–270)

परिहरि का राम कह बौरे सुनि सिख बन्धु मोरी।
ळरि को नाँव अमै–पद–दाता कहे कबीर कोरी।।

(कबीरग्रंथ पद–346)

अनंतदास की कबीर परिचयी में कबीर को जुलाहा जाति का बताया गया है –

कासी बसे जुलाहा एक, हरि भगतिन की पकरी टेक

(अनंतदास कबीर परिचयी)

जॉन मैल्काम द्वारा सन् 1810 में प्रकाशित अपने लेख ''स्केच ऑफ द सिख'' में कबीर का वर्णन करते हुए उन्हें पक्का और प्रसिद्ध सूफी संत कहते हैं।[39] इस लेख में जॉन मैल्काम ने कबीर को जुलाहा तथा शेरशाह सूरी का समकालीन कहा है।[40]

सन् 1828 और 1832 में खोज के आधार पर विल्सन ने कबीर को वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी माना है। विल्सन के अनुसार कबीर रामानंद के शिष्य नहीं भी है तो भी वे रामानंद से प्रभावित जरूर है। विल्सन कबीर को हिन्दू मानते हैं।[41]

अन्य स्त्रोतों में कबीर को जुलाहा या कोरी ही कहां गया है –

1. नामा छीपा कबीरू जोलाहा पूरे गुर ले गति पाई।

गुरू अपनदास

(आदि ग्रन्थ, सिरीरागु, महला उपद 22)

2. जुलाहा गमे उत्पत्यो, साथ कबीर महामुनि

रज्जब दास

(सर्वांगी, साथ महिमा, 13)

3. जुलाहा की तब अवधि सिराना, मथुरा देह धरी तिन आनी

अनुराग सागर

अबुल फजल तथा शेख मुस्ताकी ने कबीर के लिये ''युवाहिद'' शब्द का उपयोग किया गया है। वादिवेल का मत है कि हो सकता है उस काल के कट्टर मुस्लिम जन कबीर को मुस्लिम न मानते हो इस कारण युवाहिद शब्द का उपयोग किया गया हो।[42]

रैदास और पीपा जिन्हें कबीर का समकालीन न भी माना जाए तो भी उनके और कबीर के समय में अंतर बहुत अधिक नहीं था। संभव है कि वे कबीर के समकालीन हो। रैदास और पीपा ने कबीर को मुस्लिम सम्प्रदाय का स्वीकार किया है –

''जाकि ईदि बकरीदि–नित गऊ रे। वध करे मानिये शेष सहीद पीरा।
बाप वैसी करी पूत ऐसी धरी। नाव नवखंड परसिध कबीरा।।''

–पीपा सर्वांगी, भजन प्रताप पद 22

जकि ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानी अहि सेख सहीद पीरा।
जाके बाप ऐसीं करी पूत औसी करी बिहूरे लोग परसिध् कबीरा।।

–रैदास आदिग्रंथ, रागु मलार 2

उपरोक्त सभी तथ्यों का अध्ययन करने पर कबीर की जाति ज्ञात करना असंभव प्रतीत होता हैं। कबीर के समकालीन ग्रंथों का अध्ययन किया जाए तो इस मत को बल मिलता है कि कबीर जुलाहा थे। कबीर के जुलाहा होंने का उल्लेख अनंतदास की कबीर परिचयी, प्रियादास की टीका, अनुराग सागर, आदिग्रंथ सिरी रागु, अबुल फजल की आईन–ए–अकबरी आदि से प्राप्त होता है।

2.5. कबीर का विवाह :–

कबीर की पत्नि के सन्दर्भ में स्पष्ट प्रमाण वर्तमान में उपलब्ध नहीं है, जिसके आधार पर स्पष्ट रूप से कुछ कहा जा सके। कबीर ग्रंथवली का एक पद उनकी पत्नि को लेकर है –

हम तुम बीच भयो नही कोई, तुमही सुकंत नारि हम सोई।
कहत कबीर सुनहु रे लोई। अब तुम्हारी परनीति न होई।।[43]

इस पद को कबीर की पत्नि से संबंधित माना जाता है। कबीर की पत्नि का नाम इस पद में लोई दिया गया है।

डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा अनुमान लगाया जाता है कि कबीर की दो पत्नियाँ थी –

पहिली कुरूपी कुजाति कुलकनी साहुरे पेईर बुरी।
अबकि सरूपि सुजानि सुलक्षिणी सहदे उदरी धेरी।।[44]

निम्न पद के आधार पर कबीर की पत्नि का नाम धनिया स्वीकार करते है –

मेरी बहुरिया को धनिया भाऊ। ले राखीजो राम जानिआ नाऊ।।[45]

इन पदों के आधार पर डॉ. रामकुमार वर्मा धनिया तथा लोई को कबीर की पत्नि स्विकार करते हैं। रामकुमार वर्मा के इस मत का समर्थन सरनाम सिंह शर्मा द्वारा किया गया है।[46]

कबीरपंथी कबीर को विवाहित नहीं मानते है। वे कबीर को सन्यासी के रूप में स्वीकार करते है।[47] कबीरपथियों का मत है कि कबीर की परीक्षा लेने की दृष्टि से शेख तकी द्वारा मृत बालक बालिका को जीवित करने हेतु कबीर को कहा गया। ऐसा कहा जाता है कि कबीर द्वारा उन बालक बालिका को नवजीवन दिया गया।[48] यह दोनों बालक बालिका ही कमला और कमाली थे।

2.6. कबीर की शिक्षा :–

कुछ पदों के आधार पर ये अनुमान लगाया जाता है कि कबीर का परिवार आर्थिक रूप से कमजोर था तथा बमुश्किल ही वे अपना जीवनयापन कर पाते थे। इस संबंध मे प्रस्तुत पद निम्न लिखित है –

दाइम दवा करद वजादै, मैं क्या करू भिकारी।
कहै कबीर मैं बन्दा तेरा, बालिका पहन तुम्हारी।।[49]
इब न रहू माटी के घर में, ईब मैं जाई रहू मिलि हरि में।
छिनहर घर आरू झिरहर टाटी, घन गरजत कपै मेरी छाती।।[50]

कबीर ने गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त नहीं की वे जीवन भर अनपढ़ ही रहे,[51] परिणामस्वरूप उन्हें किताबी ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाया। यद्यपि उन्होंने व्यवहारिक ज्ञान, तात्कालिक सामाजिक व धार्मिक परिस्थिति का स्पष्ट अनुमान लगा कर अपने दृष्टिकोण को व्यापक बना लिया था।

कबीर ने भारत के अधिकतर क्षेत्रों में भ्रमण तथा सत्संग द्वारा संसार के ज्ञान को आत्मसाद किया। मथुरा, काशी, पूरी, द्वारिका, कबीर बड़ आदि का उल्लेख कबीर के भ्रमण स्थलों रूप में देखने मिलता है।[52]

2.7. कबीर की दीक्षा :–

(क). रामानंद :–

अधिकांश विद्वान तथा कबीरपंथियों का मत है कि रामानंद ही कबीर के गुरू थे।[53] पीताम्बर दत्त बड़हवाल, श्यामसुन्दर दास, रामकुमार वर्मा भी इसी मत के सर्मथक हैं।[54] इस मत को लेकर एक लोकोप्ति भी प्रचलित है कि–

एक बार रात्रि में कबीर बनारस के पंचगंगा घाट की सीढियों पर लेट गए, उन्ही सीढ़ीयों से होकर रामानंद प्रतिदिन स्नान के लिए आया करते थे। जब रामानंद गंगा स्नान के लिए सीढ़ीयों से उतरने लगे तो अन्धेरा होने के कारण रामानंद का पैर कबीर पर पड़ गया। रामानंद ने राम–राम कहा, कबीर ने राम नाम को गुरू मन्त्र रूप में स्वीकार कर शिष्य बन गए।[55] इसके अतिरिक्त निम्न पंक्तियों के आधार पर रामानंद को कबीर का गुरू स्वीकार किया जाता है –

1) कबीर गुरू बसै बनारसी[56]

2) काशी में हम प्रगट भये है रामानंद चेताये[57]

3) गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागु पॉव।
बलिहारी गुरू आपने बिन गोविन्द दियो बताय।।[58]

कबीर पूर्ण मन से गुरू का आदर सम्मान करते थे। गुरू के उपदेश से उनके ज्ञान चक्षु खुल गए थे।

सद्गुरू की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाडियो, अनंत दिखवन हार।।[59]

मोहसीन फनी द्वारा 17 वीं सदी में लिखित ग्रन्थ दबिस्ताने मजाहिब के अनुसार कबीर ने रामानंद को अपना गुरू बनाया था।[60]

(ख). शेख तकी :–

यह अनुमान लगया जाता है कि शेख तकी कबीर के गुरू थे। शेख तकी के रूप में दो व्यक्तित्व का उल्लेख है एक का सम्बंध कड़ा मानिकपुरी से है तथा दूसरे झूँसी से है। झूँसी से सम्बंधित शेख तकी को ई. वेस्टकॉट ने कबीर का समकालीन बताते हुए कहा है कि कबीर उनसे मिलने झूँसी गये थे।[61]

इलाहाबाद गजेटियर के अनुसार इस शेख तकी का समय संवत् 1377 से संवत् 1441 का था।[62] यदि ये कबीर के समकालीन भी थे तो यह मानना कि कबीर के गुरू थे इस सम्बंध में कोई प्रमाण नहीं हैं।

एक शेख तकी जो कड़ा मानिकपुरी के थे इनकी चर्चा ''अखबारूल अधियार'' नामक ग्रन्थ में हुई है। मौलवी गुलाम सखर की इस रचना का समय संवत् 1925 है।[63] इसमें कबीर और शेख तकी के देहवासन का समय क्रमशः संवत् 1641, संवत् 1631 दिया गया है।

बीजक की रमैनी 48 में इस बात का उल्लेख है कि कबीर शेख तकी की प्रशंसा सुन कर कड़ा मानिकपुर आये तथा रमैनी 63 से पता चलता है कि कबीर का शेख तकी के प्रति कुछ विशेष लगाव नहीं था।

2.8. कबीर का देहत्याग :–

कबीर के जीवन का अधिकतर समय काशी में ही व्यतीत हुआ था। कबीर का अंतिम समय मगहर में व्यतीत हुआ था। इस मगहर शब्द को लेकर विद्वानों में अलग–अलग मत है –

1. वैदिक काल में मगह क्षेत्र का उल्लेख करते हुए ऐसे क्षेत्र को अमांगलिका स्थान कहा गया है।[64]

2. मगह शब्द को मगध का अपभ्रंश भी कहा जाता है। कहा जाता है कि मगध में त्रिशंकु की लार से कर्मनाशा नदी बहती है परिणामस्वरूप इस क्षेत्र को अपवित्र माना जाता है।[65] कबीर ने कही भी मगह या मगध शब्द का उपयोग नहीं किया है। उन्होंने हमेशा मगहर शब्द का ही उपयोग किया है। गरीबदास ने कबीर के अंतिम समय का उल्लेख करते हुए कहा है कि–

''कासी मरे सो जाय मुक्ति को, मगहर गदहा कोई''[66]

कबीरपंथी साहित्य के अनुसार कबीर ने वि. सं. 1575 में मगहर में अंतिम समाधि ली।[67] कबीर के देह त्याग के पश्चात् उनके पार्थिव शरीर के स्थान पर कुछ पुष्प स्थित थे जिसे हिन्दू और मुस्लिस समुदाय द्वारा आपस में बांट लिया गया। हिन्दुओं द्वारा पुष्प पर मजार का निर्माण किया गया।

इस प्रकार कबीर की मजार व समाधि मगहर में आस–पास स्थित है। कबीर के शिष्य नवाब बिजली खाँ पठान और राज बीरसिंह बघेल द्वारा इन दोनों स्थलों का निर्माण किया गया। जिसका सन् 1567 में नवाब फिदायी खाँ द्वारा जीर्णोद्वार किया गया।[68]

3. निष्कर्ष :–

कबीर से सम्बंधित ऐतिहासिक साहित्यों तथा तथ्यों की अल्पता हैं। जिस कारण कबीर के जीवन परिचय से सम्बंधित वर्तमान साहित्य में भिन्नता हैं। अब तक प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कबीर का जन्म बनारस में हुआ तथा अंतिम समय मगहर में व्यतीत हुआ। कबीर निरक्षर थे परन्तु उन्हे तात्कालीन समाज, धर्म, रीतिया, दर्शन और मानवतावाद का ज्ञान था। तत्कालीन साहित्य के

आधार पर यह कहा जा सकता है कि कबीर जुलाहा जाति के रहे होगे। कबीर की माता के सम्बंध में स्पष्ट प्रमाण वर्तमान समय तक उपलब्ध नही है अतः कबीर को विधवा ब्राम्हणी का पुत्र कहना उचित प्रतीत नही होता। कबीर ने अपने जीवनकाल का अधिकतर समय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए व्यतीत किया, परिणाम स्वरूप अधिकतर समकालीन व्यक्तित्व के साहित्य से कबीर का उल्लेख प्राप्त होता हैं।

4. संदर्भ सूची :—

1. दीक्षित, त्रिलोकी नारायण, परिचयी साहित्य,, विश्व विद्यालय हिन्दी प्रकाशन लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ, पृष्ठ क्रमांक 217.
2. लौरेन्जन, एन. डेविड, कबीर लीजेण्डस एण्ड अनंतदासाज कबीर परिचयी, श्री सदगुरू पब्लिकेशन, दिल्ली, 2002, पृष्ठ क्रमांक 26—78.
3. दि हेजियोग्राफी ऑफ अंनतदास, विनान्त कैल्वट, कर्जन प्रेस, रिचमण्ड 2000 पृष्ठ क्रमांक 12—41.
4. वही.
5. अग्रवाल, पुरूषोत्तम, कबीर, साखी और सबद, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 203.
6. भक्तमाला पृष्ठ 32 खण्ठ 2 पद 37

   अनन्तानन्द कबीर सुखा सुस्सरा पद्मावति नरहरि।
   पीपा भावानन्द रैदास धना सेन सुरसरि किय धरहरी ।।
7. नाभादास लिखित भक्तमाला, पृष्ठ क्रमांक 538, छप्पय 60.
8. कबीर चरित्र बोध—बोध सागर, संशोधन स्वामी युगलानंद, श्री व्यकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, 1986, पृष्ठ क्रमांक 73.
9. चैतन्य, मोतीदास, स्वसंवेद, स्वसंवेद कार्यालय चेतनधाम, सीयाबाग, बडोदा, 1956, पृष्ठ क्रमांक 66.
10. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 62.
11. वही.
12. वही.
13. वही.
14. वीर सिंह बोध, कबीर कथा

    यह लीला करि सकल कबीरा। आयो बांधो पुनि मत धीरा।।

    — रघुराजसिंह कृत.
15. वर्मा, रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटड, इलाहबाद, 1947, पृष्ठ क्रमांक 268.

16. त्रिगुणायन, गोविन्द, कबीर की विचारधारा, साहित्य निकेतन, कानपुर, 1957, पृष्ठ क्रमांक 29.
17. शर्मा, सारनाथ सिंह, कबीर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिद्धांत, गांधी शिक्षण समिति, गुलाबपुरा, 1969, पृष्ठ संख्या 77.
18. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, काशी नगरी प्रचारणी सभा, काशी, 1968, पृष्ठ क्रमांक 77.
19. साहेब, गृन्धमुनिनाम, आर्शिवाद शताब्दी ग्रन्थ, श्री सदगुरू धर्मदास साहेब वंशावली प्रतिनिधि सभा, दामाखेडा, 2004, पृष्ठ क्रमांक 09.
20. भक्तमाला, कबीर छप्पय , पृष्ठ 69, वेकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, 1989,

भक्ति विमुख जो धर्म सु सब अधरम करि गयो।
योग यज्ञ व्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखायो।।
हिन्दू तुरक प्रमाण रमैनी सबदी साखी।
पक्षपात नही वचन सबन के हित की भाखी।।
आरूद दशा है जगत पर, मुखदेखी नाहिन भनी
कबीर कानि राखी नही, वर्णाश्रम षट्दर्शनी।।60।।

21. चैतन्य, मोतीदास, स्वसंवेद, स्वसंवेद कार्यालय चेतनधाम सियाबाग, बडोदा, 1940, पृष्ठ क्रमांक 89.
22. वही.
23. नाग, पृथ्वीश, भारत सांस्कृतिक विरासत एटलस, राष्ट्रीय एटलस एवं थिमैटिक मानचित्रण संगठन केन्द्रीय सरकार कार्यालय परिसर, कोलकता, 2010, पृष्ठ क्रमांक 45.
24. शुकदेवसिंह, विवेकदास, साध मता है सार, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र कबीरचौरा मठ, बनारस, 1981, पृष्ठ क्रमांक 23–24.
25. दास, शंकर, श्री कबीर चरितामृत, हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स नीचीबाग, बनारस, वि.सं. 2012, पृष्ठ क्रमांक 5.
26. साहेब, गृन्धमुनिनाम, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 5–9.
27. दास, अभिलाश, ढाई आखर, कबीर पारख संस्थान, इलाहबाद, 1988, पृष्ठ क्रमांक 188–189.
28. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 188–191.
29. चैतन्य, मोतीदास, पूर्वोक्त, 1956, पृष्ठ क्रमांक 65–68.
30. साहेब, गृन्धमुनिनाम, आर्शिवाद शताब्दी ग्रन्थ, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 09.
31. दास, अभिलाष, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 188–189.
32. चैतन्य, मोतीदास, पूर्वोक्त, 1940, पृष्ठ क्रमांक 89.
33. दास, अभिलाष, कबीर व्यक्तित्व और कर्तव्य, पारख प्रकाशक कबीर संस्थान, इलाहबाद, 1969, पृष्ठ क्रमांक 72–73.
34. वर्मा, रामकुमार, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 270.

35. दास, श्यामसुन्दर, कबीर ग्रन्थावली, नगरी प्रचारणी सभा, काशी, 1930, पृष्ठ क्रमांक 89.
36. दास, अभिलाष, ढाई आखर, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 188–191.
37. शास्त्री, जगदीशदास, सदगुरू कबीर सचित्र जीवन दर्शन, श्री कबीर आश्रम कबीर रोड, जामनगर, 1990, पृष्ठ क्रमांक 17.
38. नाग, पृथ्वीश, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 45.
39. गुप्ता, सुशील, द सिख रिलीजनः ए सिम्पोजियम, इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, 1958, पृष्ठ क्रमांक 129.
40. वही.
41. विल्सन, एच. एच., द स्केच ऑफ रिलिजस सेक्टस ऑफ हिन्दुज, दिल्ली, 1972, पृष्ठ क्रमांक 37–38.
42. वादिवेल, शारलोत, कबीर, लंदन, 1974, पृष्ठ क्रमांक 34.
43. दास, श्यामसुंदर, कबीर ग्रन्थावली, नगरी प्रचारणी सभा, वाराणसी, 14 वाँ संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 275, पद 38.
44. वर्मा, रामकुमार, संत कबीर, साहित्य भवन, इलाहबाद, पृष्ठ क्रमांक 122.
45. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 123.
46. शर्मा, सरनाम सिंह, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 77.
47. दास, अभिलाष, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 75–76.
48. शास्त्री, जगदीशदास, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 32–35.
49. सिंह, पुष्पपाल, कबीर ग्रन्थावली, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ क्रमांक 474, पद 323.
50. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 445, पद 273.
51. कृपलानी, सचेता, लेख कबीर की देन भारतीय समाज को, कबीर व्यक्तित्व और कर्तव्य दास अभिलाष पारख प्रकाशन कबीर संस्थान, इलाहबाद, 1969, पृष्ठ क्रमांक 44.
52. नाग, पृथ्वीश, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 45.
53. शास्त्री, गंगाशरण, श्री सदगुरू कबीर ज्ञान दर्पण, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र कबीर घाट, बनारस, 2013, पृष्ठ क्रमांक 110.
54. द्विवेदी, केदारनाथ, कबीर और कबीर पंथ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965, पृष्ठ क्रमांक 75.
55. शर्मा, व्रहादत्त, कबीर कल्पना शक्ति और काव्य सौंदर्य, भारतेन्दु भवन, शिमला, 1969, पृष्ठ क्रमांक 33.
56. सिंह, पुष्पपाल, कबीर ग्रन्थावली, आशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, अष्टम प्रकाशन, 1988, पृष्ठ क्रमांक 245, दोहा 2.
57. उपाध्याय, अयोध्या सिंह, कबीर प्रश्नावली, नगरी प्रचारणी सभा, काशी, बारहवां संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 252, पद 225.

58. पूर्ववत्, पृष्ठ क्रमांक 129, दोहा 300.
59. तिवारी, पारसनाथ, कबीर ग्रन्थावली, हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविधालय, प्रयाग, 1961, पृष्ठ क्रमांक 137, दोहा 13.
60. वेस्टकॉट, जी.एच., कबीर एण्ड द कबीरपंथ, क्राइसचर्च मिशन प्रेस, कानपुर, 1907, पृष्ठ क्रमांक 37.
61. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 24–25.
62. मोहनसिंह, कबीर हिज बायोग्राफी, पृष्ठ क्रमांक 19.
63. वेस्टकॉट, जी. एच., पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 15–16.
64. द्विवेदी, केदारनाथ, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 65.
65. वही.
66. गरीबदास की बानी, वेलवेडीयर प्रेस, प्रयाग, पृष्ठ क्रमांक 86.
67. प्रसाद राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 203.
68. दास श्यामसुंदर, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 18.